

हृदल दवलस

भारत के प्रधानमंत्री ने हृदल दवलस के अवसर पर कहा क हृदल भाषा ने भारत को वशुव स्तर पर वशुष सम्मान दललाया है और इसकी सादगी और संवेदनशीलता हमेशा लोगों को आकर्षण करती है ।

हृदल दवलस के पीछे का इतहास:

- वर्ष 1949 में भारत की संवधान सभा द्वारा हृदल को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के दिन को चहिनति करने के लयि भारत में प्रत्येक वर्ष **14 सतिंबर को हृदल दवलस या राष्ट्रीय हृदल दवलस** मनाया जाता है ।
- भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में हृदल का उपयोग करने का नरिणय **26 जनवरी, 1950** को भारत के संवधान द्वारा लया गया था तथा भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा इस दिन को **हृदल दवलस** के रूप में मनाने का फैसला कया गया था ।
- हृदल भाषा **आठवीं अनुसूची में भी शामिल** है ।
- हृदल शास्त्रीय भाषा नहीं है ।
- अनुच्छेद **351 'हृदल भाषा का प्रचार एवं उत्थान'** से संबंधित है ।

हृदल को बढ़ावा देने हेतु सरकार की पहल:

- केंद्रीय हृदल नदशलालय** की स्थापना वर्ष 1960 में भारत सरकार द्वारा शकुषा मंत्रालय के अंतर्गत हृदल को बढ़ावा देने और प्रचारित करने के लयि की गई थी ।
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद** ने हृदल भाषा को बढ़ावा देने के लयि वदशों में वभिन्न वशुवदयालयों/संस्थानों में **'हृदल चेर'** की स्थापना की है ।
- लीला-राजभाषा** (आर्टफिशियल इंटेलजेंस के माध्यम से भारतीय भाषा को सीखना) हृदल सीखने के लयि **एकमल्टीमीडया आधारित स्व-शकुषण अनुप्रयोग** है ।
- ई-सरल हृदल वाक्य कोश** और **ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप**, राजभाषा वभिग की दोनों पहलों का उद्देश्य हृदल के वकलस के लयि सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करना है ।
- राजभाषा गौरव पुरस्कार** और **राजभाषा कीर्त पुरस्कार** हृदल भाषा के वकलस में योगदान देने वालों को प्रदान कयि जाते हैं ।

हृदल भाषा:

- हृदल वशुव की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और देवनागरी लिपि में लिखी जाती है । भाषा का नाम फारसी शब्द 'हृदल' से मला- जसिका अर्थ है 'सधु नदी की भूमि'; और संस्कृत के वंशज हैं ।
- 11वीं शताब्दी की शुरुआत में तुर्की के आक्रमणकारयों ने सधु नदी के आसपास के क्षेत्र की भाषा को हृदल यानी 'सधु नदी की भूमि की भाषा' नाम दया ।
- यह भारत की आधिकारिक भाषा है, जबक अंगरेजी दूसरी आधिकारिक भाषा है ।
- भारत के बाहर कुछ देशों में भी हृदल बोली जाती है, जैसे मॉरीशस, फजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रनिदाद और टोबैगो एवं नेपाल आदी ।
- हृदल अपने वर्तमान स्वरूप में वभिन्न अवस्थाओं के माध्यम से उभरी, जसिके दौरान इसे अन्य नामों से जाना जाता था । पुरानी हृदल का सबसे प्रारंभिक रूप अपभ्रंश था । 400 ईस्वी में कालदास ने अपभ्रंश में 'वकिर्मोर्वशयिम' नामक नाटक लिखा ।
- आधुनिक देवनागरी लिपि 11वीं शताब्दी में अस्तत्व में आई ।

स्रोत: हृदलसतान टाइमस

